धार्मिकता का वर्तमान स्वरूप एवं मानव समाज की नियति!!

ऐसा प्रतीत होता है कि प्रथम प्रथम में मानव जाति के धरती पर उद्भव में आने के लाखों लाख साल पश्चात जब मानव ने विभिन्न विषयों पर सोचना शुरू किया होगा । पृथ्वी पर घटने वाली प्राकृतिक आपदाओं से भय के मारे उनसे बचने के लिए और अपने आप को सुरक्षित करने के लिए तरह-तरह के उपचार शुरू किए होंगे । जिसका अंतिम परिणाम धर्म की उत्पत्ति के रूप में हुआ होगा। इसी क्रम में विभिन्न तरह के पूजा पाठ एवं कार्यकलापों द्वारा प्रकृति को शांत करने की या प्रकृति के कोप को कम करने की उसकी इच्छाओं ने उसके लिए तरह-तरह के उपायों को जन्म दिया और कालांतर में जब उसके लिखने-बोलने की क्षमता बढ़ी और उसके भी कई हजारों साल बाद जब भाषा का रूप विकसित हुआ और उसके भी हजारों साल बाद जब लिपि का आविष्कार हुआ होगा। तब जाकर धरती के विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाले विभिन्न मानव संप्रदाय जातियों, कबीलों और समुदायों ने अपने उन उपायों उपचारों को तदनुसार लिपिबद्ध करना प्रारंभ किया होगा और संभवत- यहीं से मानव जाति के विभिन्न समुदायों में क्रमशः धर्म के प्रारंभिक स्वरूप की शुरुआत हुई होगी ।

और उसके भी हजारों साल बाद जब मानव जाति में शिक्षा की आवश्यकता महसूस हुई होगी तथा मानव जाति द्वारा आविष्कृत इन उपायों और उपचारों से सभी को अवगत कराने के उद्देश्य से जो ग्रंथ लिखे गए होंगे उनमें तदनुसार प्रकृति के विषय तरह-तरह के नियमों को सूचीबद्ध किया गया होगा और उसके पीछे उसकी यही चाहना रही होगी कि इससे हम प्रकृति के कोप से बच पाएंगे। किंतु कालांतर में शिक्षा के प्रभाव से विभिन्न लोग उच्च शिक्षा के विशेषज्ञ बन गए और बाकी लोग सामान्य बने रहे गए होंगे । उन विशेषज्ञों ने उन लिपिबद्ध ग्रंथों को अपने तरीके से नियमबद्ध करना प्रारंभ किया और उन नियमों का पालन करवाने के लिए एक कल्पना की, जो बाद में धर्म कहलाई और इस धर्म के अनुसार लिपिबद्ध ग्रंथों में उल्लिखित नियमों और कर्मकांडों का पालन करना अनिवार्य बना दिया गया होगा तथा उनका विरोध या उन में अवरोध डालना धर्म विरोधी माना जाने लगा होगा । धर्म की प्रारंभिक शुरुआत यहीं से होती है। इसके अलावा कुछ भी धर्म नहीं है। धर्म मानव की मानव जाति के हित के उद्देश्य से कल्पित की गई वह कल्पना है, जिस पर बाद में कतिपय प्रबुद्ध लोगों ने अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया, जो गुरु-मौलवी इत्यादि कहलाए गए होंगे। एक स्थिति तो यह बनती है और दूसरी स्थिति वह है, जहां उस युग के परम ज्ञानी लोगों ने, ऋषियों ने कंदराओं में, गुफाओं में जाकर ध्यान लगाया होगा। तपस्या की होगी और अपने भीतर उतर कर ब्रह्मांड के रहस्यों को समझने और जानने की चेष्टा की होगी और तब उन्होंने अपने सम्यक ज्ञान के आधार पर समाज हेतु कुछ नियमों की रचना की होगी। जिस पर चलकर समाज सर्वमुखी उन्नति की ओर बढ़ सकता होओ। ऐसे एक देश या क्षेत्र विशेष के रूप में अपने देश भारत को स्थान दिया जा सकता है। इस प्रकार कालांतर में तरह-तरह के लोगों के द्वारा तरह-तरह के संप्रदाय स्थापित किए गए। इस जिनमें कुछ विशुद्ध राजनीतिक भी थे और कुछ धार्मिक भी कहे जा सकते थे और कुछ विशुद्ध कल्पित अंधविश्वासों पर आधारित रहे थे और यहीं से पृथ्वी के विभिन्न भौगोलिक परिवेश में रह रहे लोगों ने अपने अपने क्षेत्र में घट रही विभिन्न आपदाओं को नियंत्रित करने के लिए तथा महामारियों से छुटकारा पाने के लिए अपनी कल्पना से कुछ नियम रचे, कुछ उपाय सोचे, जिनका वास्तव में कोई वैज्ञानिक आधार नहीं था। यहां यह उल्लेख कर देना उचित जान पड़ता है कि विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों के तदनुरूप सोचे गए और निर्मित किए गए उपचारों का तो फिर भी कोई न कोई परिणाम मिल पाना संभव था। लेकिन शुद्ध काल्पनिक तौर पर किये गए उपचारों या उपायों का कोई भी निश्चित परिणाम नहीं था! फिर भी प्रकृति को संतुष्ट करने के उद्देश्य से अपनाए गए उन सुविचार एवं नियमों का अनुपालन अनिवार्य बना दिया गया और उससे विचलन करने वाले मनुष्य को धर्म बाहर भी किया जाने लगा। इस प्रकार समय के साथ क्रमशः व्यवस्थित होते हुए धर्म की वर्तमान संरचना की उत्पत्ति हुई और वर्तमान में जो धर्म और संप्रदाय हमारे सम्मुख दिखाई देते हैं, ये सभी कहीं ना कहीं उन्हीं का प्रतिफल है। मजेदार बात यह है कि हजारों हजार साल पहले उस समय की उत्पन्न परिस्थितियों के अनुसार सोचे गए विभिन्न तरह के उपचारों और विभिन्न तरह के नियमों की व्याख्या आज के बिल्कुल पृथक हो चुके परिवेश में भी उसी प्रकार अपनाए जाने पर जोर देने को भी वास्तविक धर्म कहा जाने लगा और उससे भी बड़ा विद्रूप्य यह है कि विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों के अनुसार उस वक्त के धार्मिक बुजुर्गों द्वारा तय किए गए विशेष परिधान को ही उस धर्म या संप्रदाय का वास्तविक अंग मांग लिया गया और उसी को विश्व की समस्त भौगोलिक परिस्थितियों के संदर्भ के लिए एक समान रूप से धर्म विशेष में सार्वभौमिक मान ली गई । इसी से वह अवरोध उत्पन्न हुए । जो आज हमें अपने जीवन में दिखाई देते हैं। एक तरफ तो कोरी कल्पना से पैदा हुई धार्मिकता और दूसरी तरफ वैसी ही किन्हीं कल्पनाओं से पैदा हुए अपनी-अपनी तरह के विशेष ईश्वर !!

किंतु कुल मिलाकर इन कल्पनाओं को, इन अवधारणाओं को धार्मिक जामा पहनाकर मानव जाति को पूरी तरह से धर्म का बंदी बना लिया गया । जबकि इसकी कोई विशेष आवश्यकता नहीं थी। क्योंकि धर्म यदि ईश्वर का अंश था, तो भी यह समझा जाना बहुत आवश्यक था कि ईश्वर ने यदि धरती को रचा है और सभी प्राणियों को रचा है। तो वह ईश्वर सभी का तो है! विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों के आलोक में विभिन्न तरह की ईश्वरीय की कल्पना हमने की, यहां तक तो सब कुछ ठीक था, लेकिन जैसे-जैसे नई-नई मान्यताएं पनपती गई और उनके अनुसार नए-नए ईश्वर बनते गए और फिर अपने ही बनाए हुए उन समस्त ईश्वरों में भी भेद करके एक दूसरे से लड़ने की मूर्खता आज तक भी हम लोग करते चले आ रहे हैं। इस बात ने समूची मानव जाति में एक भयंकर व्यतिक्रम पैदा कर दिया है और हममें से प्रकांड विद्वान लोग भी या तो इसे समझ नहीं पा रहे या कुछ भी कर पाने में अपने आप को बिल्कुल असमर्थ पाते हैं और कठिनाई यह भी है कि इन मूढ़ताओं पर किसी भी धर्म का कोई भी पंडित या मुल्ला विचार ही नहीं करता !! वास्तव में समय के साथ धर्म केवल धर्म न रहकर अल्टीमेटली एक तरह का राजनीतिक साम्राज्य हो गया और इन सभी विविध धार्मिक साम्राज्यों के तथाकथित प्रबुद्धजन या मौलवियों या पंडितों या सो कॉल्ड संतों को अपने लाखों लाख अनुयायियों का मोह घर कर गया !

वर्तमान दौर में पूरी धरती पर धर्म और राजनीति का एक ऐसा घालमेल हो गया, जहां पर धर्म और राजनीति दोनों अपने-अपने अनुयायियों को एकत्र करने के लिए और उन्हें अपनी छतरी के नीचे बनाए रखने के लिए कितने तरह के झूठ-सच और प्रपंच रचने वालों का बोलबाला चाहूं और हो गया ! सच कहूं तो यह भी शोधार्थियों के लिए एक रोचक विषय हो सकता है कि धर्म या राजनीति का वास्तविक स्वरूप कहाँ गुम हो गया है? धर्म और राजनीति का किस सीमा तक चोली-दामन का रिश्ता है और इस रिश्ते में किस-किस तरह के प्रपंच रचे जाते हैं? धर्म का सबसे कलुषित पक्ष तो इसके द्वारा नारी की गरिमा का हनन है। यद्यपि एक तरफ तो सैद्धांतिक रूप से सभी धर्मों में नारी के गुणों का व्याख्यान किया गया है और उन्हें देवी की उपाधि से विभूषित भी किया गया है, किंतु दूसरी तरफ उन सभी धर्मों में व्यवहार में नारी की वास्तविक स्थिति ऐसी है कि यह समूची मानव जाति के लिए अब भी अत्यंत लज्जा की बात है! भले ही इसका कारण कुछ भी हो!

यहीं पर यह बात उल्लेख की जानी उचित जान पड़ती हैं कि धर्म जब अपने प्राकृतिक रूप में पहले पहल सामने आया था। तब वह विभिन्न प्रकार के क्रियाकलापों के रूप में हुआ करता था। हजारों लाखों साल बाद जब भाषा और लिपि का आविष्कार हुआ और लोगों में अहंकार जनित प्रभुता या बौद्धिकता नाम की एक बिल्कुल ही अवास्तविक विषय ने जन्म लिया। तब उन्होंने लोक भाषा से बिल्कुल अलग एक शास्त्रीय भाषा का आविष्कार किया, जिसे लोकमानस बिल्कुल भी समझता बूझता नहीं था और इसी लोक दूरी से धर्म की व्यापक क्षति होनी प्रारंभ हुई। क्योंकि धर्म के स्वरूप में लोक भाषा से बिल्कुल इतर एक बिल्कुल ही शास्त्रीय भाषा अस्तित्व में आई, जो महज कुछ ही लोगों की ही बपौती थी और उन्होंने बेशक मानव जाति के हितार्थ बहुत सारी बातें, बहुत सारे उपाय, उपचार, क्रियाकलाप और आडंबर उन ग्रंथों में रखे थी। किंतु हर विषय और हर बात अपने आप में सम्यक और परिमार्जित थी ऐसा कहना उचित नहीं प्रतीत होता । और क्योंकि वह भाषा लोक से बिल्कुल पृथक थी, तो नए आने वाले, अर्थात् उनके बाद के जो प्रबुद्ध लोग कालांतर जन्म लिए और उन्होंने जब अपने ही प्रकार से उन विषयों को व्याख्यायित करना आरम्भ किया। यहीं से ये बातें गड़बड़ाने लगीं। क्योंकि हर नया प्रबुद्ध नए तरीके से चीजों की व्याख्या करता चला गया और हजारों हजार वर्ष से चले आ रहे धर्म के उस वास्तविक स्वरूप को अपनी प्रारंभिक डोर के स्वरूप से बिल्कुल ही पृथक कर दिया। आज विभिन्न धार्मिक समुदायों में उनके जो प्रमुख धार्मिक ग्रंथ है। सभी की भाषा और लिपि वह है, जिसे वस्तुतः साधारण जन बिल्कुल नहीं समझता। और उसकी व्याख्या भी उन धर्मों के पंडित-मौलवी इत्यादि करते हैं और जो व्याख्या वह करते हैं, वही उस धर्म के अनुयायियों को माननी पड़ती हैं और इन धार्मिक रूप से जड़ मुल्लाओं, मौलवीयों और पंडितों को अपने धर्म के समस्त अनुयायियों को अपनी छतरी के नीचे या खास तौर पर अपने स्वयं के आभामंडल के नीचे रखने का लोभ इतना अधिक है कि समय के साथ धार्मिकता का स्वरूप इतना अधिक कट्टर होता जा रहा है कि हर समाज समय के साथ पूरी तरह से बंद होता चला जा रहा है! जबकि आवश्यकता ठीक इसके उलट की थी। और यह कभी-कभी तो ये व्याख्याएं इतनी मंदबुद्धि और इतनी विकृत होती हैं कि विश्वास करना भी कठिन होता है कि ऐसा हुआ भी होगा या ऐसा हमारे ईश्वर ने चाहा होगा!? लेकिन हम सब उन बातों को मान लेते हैं और हमारा आचरण भी उसी अनुरूप हो जाता है और धार्मिक कट्टरता को भी अब इतने अधिक वैभव से मंडित कर दिया गया कि कट्टरता भी एक तरह का श्रृंगार हो गई है मानव समाज के लिए !? तो जो जितना कट्टर है, उतना अधिक उस धर्म के प्रति आस्थावान माना जाने लगा है और वही उसके धर्म की सफलता है!? तो ऐसे विचारों ने आधुनिक होते इस संसार को आधुनिक होने के दंभ के साथ एक ऐसे अंधे युग में भी प्रवेश दे दिया है, जहां संसार के लगभग 200 देशों में एक चौथाई देश हर समय किसी न किसी विषय पर लड़ते ही दिखाई देते हैं और यहाँ तक कि देशों के अंदर भी न केवल पृथक धर्मों, अपितु धर्म के अंदर विभिन्न समुदाय आपस में लड़ते दिखाई देते हैं!! इससे यह भी तय हो जाता है कि धार्मिक अवधारणा पूरी तरह से मनुष्य के द्वारा रचित है और इसकी जो व्याख्या की जाती हैं, वह बिल्कुल मनमानी, अधूरी और व्यर्थ है! जिसके कारण एक सामान्य मनुष्य उचित राह चलने के बजाय उल्टा राह भटक जाता है और वह अपने धर्म में एक के खास तरह का जिहाद करना प्रारंभ करता है! और यह जेहाद आज समस्त संसार में चल रहा है! उदारवादी लोग इसे मनुष्य जाति के लिए खतरा समझते हैं! किन्तु कट्टरपंथी इसे मानव जाति का उत्थान समझते हैं! विचारों का यह संघर्ष इतना विषाक्त होता चला जा रहा है कि कट्टरपंथी स्वयं को ही ईश्वर का एक अवतार या उसका दूत समझने लगे हैं और जैसे ही कट्टरता अपने पाँव पसारती है, वैसे ही स्त्रियों की गति सबसे ज्यादा दयनीय और कलुषित हो जाती है। वह चाहे किसी भी रूप में क्यों न हो ! यानी कि उपरोक्त धार्मिक आचरण भी वास्तव में एक संवेदनहीन, हिंसक और मर्दवादी है और स्त्री उसके लिए एक उपकरण मात्र है, जिसका वह कैसा भी उपयोग करके करके उसे फेंक सकता है, मार सकता है या उसका कुछ भी कर सकता है!! और यहां तक कि मानव देह का भी उसके लिए कोई मूल्य नहीं है! जन्नत या स्वर्ग पाने के लिए कट्टरता के नाम पर कैसी ही हिंसकता और हत्याएं किसी भी अर्थ में मानवीय नहीं कहीं जा सकती। फिर उन्हें ईश्वरीय समझना तो बहुत बड़ी भूल होगी! और यदि यही धर्म है!? तो इसपर अवश्य ही सोचा जाना चाहिए! जन कट्टरपंथियों के द्वारा भी कि क्या ऐसा धर्म भी हो सकता है? यदि धर्म आचरण धारण करने वाला एक स्वभाव है, तो क्या पाशविकता से भरा कोई भी आचरण किसी को शोभा दे सकता है? और क्या वह धर्म के माथे पर कंगुरा बन सकता है? यह एक अत्यंत विचारणीय विषय है और मानवता के हित के लिए संसार के सभी धर्म के समस्त कट्टरपंथियों को इस विषय पर संवेदनशील हृदय से अवश्य विचार करना चाहिए। लेकिन वे ऐसा भला क्यों सोचें? और यही वह स्थान है, जहां मानव जाति एक ऐसी अंधी सुरंग में प्रवेश करती है, जहां से वापस लौटने का कोई रास्ता नहीं! ऐसे में स्त्रियों-मासूमों और इस जगत के समस्त निर्दोष प्राणियों का क्या होगा! यह उस ईश्वर का कोई प्रतिनिधि भी नहीं जानता!!

- राजीव थेपड़ा, रांची, झारखंड , 70047-82990

45 दिवसीय ब्यूटी पार्लर कोर्स का सफल समापन

सिरसा /नोहरिया बजार के प्रिया ब्यूटी हब पर आर.वी.इंटरनैशनल संस्था के द्वारा 21 जनवरी को 45 दिन के ब्यूटी पार्लर कोर्स का आरंभ किया गया था,जो कि 5 मार्च को सफलता पूर्वक पूरा हो गया, पार्लर संचालिका प्रिया ने इन 45 दिनों में कोर्स से संबंधित अलग अलग विषयों पर छात्राओं को प्रशिक्षण दिया व उनके हुनर को निखारा , इसी कोर्स के पूरा होने पर छात्राओं को दिनांक 26 मार्च को सर्टिफिकेट वितरित किए गए और साथ मे फेशियल किट भी , इस अवसर पर संचालिका प्रिया व संस्था के सुपरवाइजर अनिल धवन , निशा धवन , मौजूद थे, इस कोर्स को अंशु, साहिबा, चरणजीत, नीतू, बीना रानी, रेणु, भावना, आयशा, गीता, किरण, पुनीत, संगीता रानी , ने छह सप्ताहो में पूरा किया , संचालिका प्रिया की तरफ से सभी छात्राओं को भविष्य के शुभकामनाएं दी गई व उन्होंने कहा कि संस्था के साथ जुड़कर व आगे भी इस कोर्स को चलाती रहेगी क्योंकि इतनी कम कीमत पर इस कोर्स को कोई भी सीख सकता है, जिससे कि सीखने वाली छात्राओं का मनोबल बढ़ता है, प्रिया ने कहा कि वह जल्द ही दूसरा बैच भी शुरू करेगी।

दुनिया में सबसे पहले कोई चीज टूटती है तो वह श्रद्धा है ,आज लोगों में अहंकार अधिक आ गया है - उपाध्याय मुनिश्री विश्रुत सागर महाराज

आष्टा। पार्श्वनाथ भगवान के सानिध्य में बैठे हैं। पंचम काल में जन्मे हैं। इस काल में साधु -संत सहित कोई भी जन्म से सम्यक दृष्टि नहीं। सबसे पहले कोई चीज टूटती है तो वह श्रद्धा है। सम्यक दर्शन के बारे में लिखा है सच्ची श्रद्धा नहीं बन पाती है आज। आज हम जिनागम और शब्दों को समझ नहीं पा रहे हैं।सब अपने -अपने हिसाब से समझ कर शब्दों को लगाते हैं, लेकिन अपने को नहीं लगाते। भगवान एक, वाणी एक मानने वाले अलग-अलग है। चौबीसी भगवान एक है।पंथ अलग -अलग बना दिए,यह सम्यक दृष्टि नहीं है।हमारी श्रद्धा नहीं बनती और सम्यक दृष्टि बनते हैं।देव, शास्त्र और गुरु को माने और उन पर श्रद्धा करें।वर्तमान ग्रंथों को समझें,जिनागम के विपरित चलते हैं और मनमानी करते हैं। जैन कुल में आने के बाद भी सम्यकत्व की प्राप्ति नहीं होती है।अजैन जैन संतों की बात मानते हैं।सम्यक दृष्टि में क्रोध भरा है, मदमस्त है फिर भी सम्यक दृष्टि बताते हैं। देखने से नहीं उसके लक्षणों से पहचान होती हैं।इंदौर में पट्टाचार्य महोत्सव आचार्य विशुद्ध सागर महाराज को,श्रवण महाकुंभ हो रहा है, वहां करीब पांच सौ साधु- संत उपस्थित रहेंगे।मनुष्य पर्याय में आने के बाद सम्यकत्व,संयम, त्याग को छोड़ देते हैं, फिर कल्याण कैसे होगा।

उक्त बातें श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन दिव्योदय अतिशय तीर्थ क्षेत्र किला मंदिर पर राष्ट्रसंत गणाचार्य विराग सागर महाराज के परम प्रभावक शिष्य उपाध्याय विश्रुत सागर महाराज ने आशीष वचन देते हुए कही । आपने कहां आठ अंग सहित और आठ मद रहित ही सम्यक दृष्टि हो सकते हैं। सम्यक दर्शन युक्त व्यक्ति ही मोक्ष मार्गी होते हैं। आचार्य समंतभद्र स्वामी के शास्त्रों का उल्लेख किया।आज लोगों में अहंकार अधिक आ गया है।आज बिना श्रद्धा के सम्यकत्व की प्राप्ति नहीं होती है। अपने लक्षणों से ही हम अपने सम्यकत्व का परिचय दे देते हैं।धर्म के नाम पर लड़ रहे हैं और सम्यक दृष्टि कहलाते हो।दस धर्म, महाव्रतों और अणु धर्मों में लड़ना लिखा है नहीं। बिना त्याग के अरिहंत बन सकते थे, नहीं। त्याग और ज्ञान किस काम का जब आपको देव, शास्त्र और गुरु पर श्रद्धान नहीं।अंक आने के बाद ही शून्य की कीमत आती है। बिना श्रद्धा के कुछ नहीं होगा।पांच पाप होते हैं। हिंसा, झूठ, चोरी,कुशील, परिग्रह यह मूल रूप से पांच पाप है। एक पाप छूट नहीं रहा है।जो पाप करता है वह पापी है।आज दशा क्या है।पाप करने वाले की दुर्गति निश्चित है।पाप नहीं करने दे ,वहीं ज्ञान है।अपना कल्याण नहीं कर पा रहे हैं फिर ऐसा ज्ञान किस काम का।यह भगवान की प्रतिमा बहुत ही आकर्षक और मनमोहक है।आज भगवान और महाराज से लोग मायाचारी कर रहे हैं,श्रद्धान बढ़ाएं। श्रद्धान ही नहीं बचा तो काहे के मोक्षमार्गी। कुछ सुना है उस पर अमल करें।विश्रुत सागर महाराज ने कहा मनमाना खा रहे और मनमाना बोल रहे हैं। मोबाइल पर सबसे अधिक झूठ बोल रहे हैं। बच्चे भी झूठ बोलना आपसे ही सीख रहे हैं। सम्यकत्व के बिना कोई कीमत नहीं। पाप और कषायों के अलावा क्या कर रहे हो। स्वयं में परिवर्तन करो। भविष्य के भगवान मिल रहें हैं।मंच पर मुनिश्री निर्वेद सागर महाराज उपस्थित थे।काजल दीदी ने मंगलाचरण किया। गणाचार्य विराग सागर महाराज एवं आचार्य विद्यासागर महाराज एवं नवाचार्य??? समय सागर महाराज के चित्र का अनावरण व्रतियों सहित समाज अध्यक्ष आनंद पोरवाल, निर्मल जैन, प्रमोद जैन, संतोष जैन, रमेशचन्द्र जैन आदिनाथ ने किया।मुनि संघ को शास्त्र भेंट व्रतियों ने किया।

ढोल ढमाके के साथ नगर प्रवेश हुआ

भोपाल नाका से नगर प्रवेश हुआ- राष्ट्रसंत गणाचार्य विराग सागर महाराज के परम प्रभावक शिष्य उपाध्याय विश्रुत सागर महाराज एवं मुनिश्री निर्वेद सागर महाराज की समाजजनों ने भोपाल नाका पर ढोल ढमाके के साथ अगवानी कर जुलूस के रूप में अस्पताल तिराहे से बुधवारा, प्रगति गली से बड़ा बाजार होते हुए किला मंदिर पर पहुंचे।

नपाध्यक्ष हेमकुंवर मेवाड़ा की अध्यक्षता में लाभ का बजट हुआ प्रस्तुत

पार्वती पुल अब अटल सेतु के नाम से जाना जाएगा, बुधवारा मार्ग का नाम होगा विद्यासागर मार्ग

आष्टा। नगरपालिका परिषद का साधारण सम्मेलन नपाध्यक्ष श्रीमती हेमकुंवर मेवाड़ा की अध्यक्षता एवं नपाध्यक्ष प्रतिनिधि रायसिंह मेवाड़ा, नपाउपाध्यक्ष सिद्दीका भूरू खां, मुख्य नगरपालिका अधिकारी राजेश सक्सेना तथा पार्षदों की विशेष उपस्थिति में नगरपालिका के परिषद सभागार में संपन्न हुआ। बजट की बैठक में परिषद ने नगर विकास के लगभग दो दर्जन बिंदुओं को सर्वसम्मति से पारित कर नगर के सर्वांगिण विकास में अपना सहयोग प्रदान किया। वित्तीय वर्ष 2025-26 के बजट प्रस्ताव मुख्य नगरपालिका अधिकारी राजेश सक्सेना ने परिषद के सभी सम्मानित सदस्यों के समक्ष प्रस्तुत किया, जिसमें आगामी बजट 2025-26 में अनुमानित 164 करोड़ 13 लाख 23 हजार 814 रूपये की आय एवं 164 करोड़ 10 लाख 13 हजार 200 रूपये का अनुमानित व्यय होना संभावित है। इस प्रकार वित्तीय वर्ष 2025-26 का बजट लाभ का बजट प्रस्तुत हुआ, जिसमें 3 लाख 10 हजार 614 रूपये की बचत है। पार्वती पुल का नाम होगा अटल सेतु - संपूर्ण आष्ठा नगर को अलीपुर बैत्र से जोड़े रखने वाले नवनिर्मित पार्वती पुल के नामकरण पर परिषद ने अपनी सर्वसम्मति देते हुए उक्त पुल का नाम अटल सेतु के नाम से करने पर प्रस्ताव पारित किया है। इसी प्रकार नगर का बुधवारा मार्ग को आचार्य विद्यासागर मार्ग का नाम देने पर परिषद ने अपनी सर्वसम्मति प्रदान की। बजट सत्र के सम्मेलन में कुल 13 प्रस्ताव रखे, जिसमें से 12

प्रस्तावों पर परिषद ने एकमत होकर सर्वसम्मति से पारित किया, 1 प्रस्ताव पर आगामी बैठक में विचार-विमर्श करने पर विचार किया गया। नपाध्यक्ष हेमकुंवर रायसिंह मेवाड़ा की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में स्वीमिंग पुल के संचालन की प्राप्त ई-निविदा दर को निरस्त कर पुनः निविदा जारी करने पर विचार किया गया, वहीं स्वीमिंग पुल पर क्लब, रेस्टोरेंट, बेडमिंटन एवं बॉस्केट बॉल का विकास कार्य करवाए जाने संबंधी प्रस्ताव को भी हरी झंडी मिली। कीर्ति स्तम्भ का होगा निर्माण - सीएमओ राजेश सक्सेना ने जानकारी देते हुए बताया कि परिषद के सहयोग से इंदौर नाका तिराहा पर कीर्ति स्तम्भ का निर्माण करवाने पर अपनी सहमति व्यक्त की है। वहीं सिंहस्थ 2028 में आने वाले अतिथियों एवं श्रद्धालुओं के ठहरने, पानी, नाश्ता एवं भोजन की व्यवस्था सुचारू रूप से करने संबंधी प्रस्ताव भी पारित हुआ। एलम-ब्लीचिंग एवं निर्माण सामग्री की प्राप्त दरों को भी परिषद ने स्वीकृत किया है।

कर्मचारियों के हित में परिषद ने लिया निर्णय - नपाध्यक्ष प्रतिनिधि रायसिंह मेवाड़ा ने बताया कि लंबे अंतराल से लंबित निकाय के कर्मचारियों के ईपीएफ जीपीएफ एनपीएस जमा करने पर परिषद ने अपनी सर्वसम्मति देते हुए कर्मचारियों के हितों को ध्यान में रखते हुए उक्त राशि शीघ्र जमा करवाने हेतु कहा गया। बैठक में नपाध्यक्ष श्रीमती हेमकुंवर मेवाड़ा, उपाध्यक्ष सिद्दीका भूरू खां, नपाध्यक्ष प्रतिनिधि रायसिंह मेवाड़ा, मुख्य नगरपालिका अधिकारी राजेश सक्सेना, पार्षदगण डॉ. सलीम, कमलेश जैन, राजकुमार मालवीय, हिफ्मनुर्रहमान भैया मियां, राशिदा अनवार हुसैन, मेहमूद अंसारी, आरती नामदेव, तस्कीन बी, नूरजहां, जाहिद गुड्डू, तारा कटारिया, तेजसिंह राठौर, रवि शर्मा, अंजनी चौरसिया सहित नपा के अधिकारी एवं कर्मचारीगण मौजूद थे।

30 मार्च को ''जल गंगा संवर्धन अभियान'' का होगा शुभारम्भ, कलेक्टनर ने तैयारियों की समीक्षा की

राजगढ़। जनभागीदारी से जल संरक्षण और संवर्धन करने के उद्देश्य से प्रदेश सरकार ने ''जल गंगा संवर्धन अभियान'' प्रारम्भ करने का निर्णय लिया है। इस अभियान का शुभारम्भ आगामी 30 मार्च को नववर्ष प्रतिपदा के अवसर पर किया जाएगा। राज्य स्तरीय कार्यक्रम उज्जैन में क्षिप्रा नदी के तट पर आयोजित होगा। जिला स्तर पर भी जल गंगा संवर्धन के शुभारम्भ कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे तथा जिले के प्रत्येक नगरीय निकाय व प्रत्येक ग्राम पंचायत में जन समुदाय की उपस्थिति में जल संरक्षण के एक-एक कार्य का क्रियान्वयन प्रारम्भ किया जाएगा। ''जल गंगा संवर्धन अभियान'' 30 जून तक जारी रहेगा। इस अभियान के क्रियान्वयन के लिये जिला स्तर पर नोडल अधिकारी कलेक्टर रहेंगे तथा अभियान के क्रियान्वयन के लिये गठित समिति में कलेक्टर अध्यक्ष रहेंगे तथा सीईओ जिला पंचायत समन्वयक के रूप में कार्य करेंगे। अनुविभाग स्तर पर गठित समिति एसडीएम अध्यक्ष तथा जनपद के सीईओ समन्वयक रहेंगे। समिति में जल संसाधन विभाग, नर्मदा घाटी विभाग, नगरीय विकास एवं आवास, उद्यानिकी विभाग, किसान कल्याण विभाग, पीएचई, पर्यावरण, स्कूल शिक्षा, संस्कृति, वन, राजस्व व जन अभियान परिषद के प्रतिनिधि सदस्य के रूप में शामिल रहेंगे। कलेक्टर डॉ. गिरीश कुमार मिश्रा एवं मुख्यस कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत श्री महीप किशोर तेजस्वीफ ने गुरूवार को जिला पंचायत में अभियान से जुडे अधिकारियों की बैठक लेकर अभियान की तैयारियों की समीक्षा की।

नपा सारंगपुर का वित्ति वर्ष 25-26 का 42,316/- की बचत का बजट पारित, कोई नया कर नही

सारंगपुर। नगर पालिका परिषद सारंगपुर का गुरुवार को साधारण सम्मेलन आयोजित किया गया। जिसमें वित्तीय वर्ष 2025-26 हेतु बजट पारित किया गया बजट प्रस्तुत करते हुए प्रभारी मुख्य नगरपालिका अधिकारी दीपक रानवे द्वारा सम्मेलन में वित्तीय वर्ष 2025-26 में निकाय की समस्त स्त्रोतों से प्रस्तावित आय 1,20,88,11,157/- अक्षरी एक अरब बीस करोड अठयासी लाख ग्यातराह हजार एक सौ सत्तावन रुपये तथा समस्तर मदों में प्रस्तावित व्यय 1,20,87,68,841/- अक्षरी एक अरब बीस करोड सत्यासी लाख अढसठ हजार आठ सौ इकतालीस रुपये बताया गया इस प्रकार कुल रूपये 42,316/- की बचत का बजट परिषद द्वारा सर्व सम्म ति से पारित किया गया। बजट में आय के मुख्यय श्रोत के रुप में निकाय को शासन से प्राप्त होने वाली चुंगी क्षतिपूर्ति एवं यात्रीकर क्षतिपूर्ति राशि एवं अनुदान राशि,विशेष निधि,शासन की महत्वपूर्ण योजनाएं अमृत 2.0 एवं कायाकल्प अभियान,स्वच्छ भारत मिशन और समय-समय पर प्राप्त होने वाले शासन अनुदान व निकाय की स्थानीय वसूलियां सम्कक्तिकर समेकित कर आदि से होने वाली आय मुख्य रूप से बजट में शामिल की गई हैं। उच्चाहनुसार प्रस्ताउवित प्राप्तल आय से वर्ष 2025-26 में होने वाले व्यय में कर्मचारियों के वेतन भत्ते विभिन्न प्रकारों के वाहनों के डिजल एवं उनके संधारण व रख रखाव पर होने वाले व्यय, नागरिकों को उपलब्ध कराए जाने वाली मूलभूत सुविधाएं जैसे सड़क,नाली,बिजली पेयजल साफ-सफाई इत्यादि पर होने वाले व्यय के साथ ही नगर के सौन्दर्यकरण हेतु नगर में पार्कों का निर्माण कार्य बस स्टैंड विकास कार्य व डामरीकरण कार्य, संजीवनी क्लीनिक निर्माण तथा सारंगपुर शहर के लिए समग्र और एकीकृत वीडियो निगरानी प्रणाली माध्यनम से शहर में सुरक्षा और निगरानी बढ़ाने के उद्देश्य से सारंगपुर टाउन सीसीटीवी आधारित शहर निगरानी और स्मार्ट सिटी फ्रेमवर्क परियोजना राशि 58.00 लाख बजट में शामिल की गई है। उक्ताकनुसार कार्यों पर प्रस्तावित व्यय सम्मिलित है। इस दौरान नगर पालिका अध्यक्ष पंकज पालीवाल द्वारा प्रस्तावित बजट को सम्मेलन में पारित करवाते हुए कहा गया कि बजट 2025-26 में विशेष रूप से शासन की साहित्यिक और सांस्कृतिक गतिविधियों को बढ़ावा देने के उद्देश्यह से प्रदेश के सभी नगरीय निकायों में सर्वसुलभ वैचारिक अध्ययन केन्द्र के रूप में ÷गीता भवन÷ की स्थापना संबंधी कार्यों तथा ऑडिटोरियम निर्माण एवं वर्ष 2028 में उज्जैन में होने जा रहे सिंहस्थी में आने वाले दूसरे राज्यों के श्रद्धालुओं के ठहरने हेतु ए.बी.रोड़ बायपास पर पूराक्षालय निर्माण व अन्य सार्वजनिक सुविधायें संबंधी निर्माण कार्यों को सम्मिलित किया गया है। साधारण सम्मेलन की बैठक में अनुविभागीय अधिकारी राजस्वण रोहित बम्होरे, पार्षदगण सिद्धू लाल पुष्पद, राजूबाई, शकीला बी अंसारी, गोपाल पाल, अमित कुमार गिरजे, राकेश पुष्पद आदि पार्षदगण एवं नगरपालिका कर्मचारी श्री विक्रीण ब्राहम्णेद उपंवत्री, सूर्यप्रकाश झाला राजकुमार गिरजे, अब्दुल समद खान, सतीश कंडारे लोकेश जाधव आदि शाखा प्रभारी एवं कर्मचारी गण उपस्थित थे।